शहादत का सवाब

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी 'रसूलुल्लाहﷺ के साथियो का हाल'.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*मुस्लीम, रावी हज़रत अबू कतादा रदी. > रसूलुल्लाहﷺ ने अपनी तकरीर में ये मज़मून बयान फरमाया की अल्लाह पर ईमान व भरोसा रखना और उसकी राह में जिहाद करना सबसे बेहतर काम है, तो एक आदमी उठा और उसने कहा की ए अल्लाह के रसूल! अगर में अल्लाह की राह में अपनी जान कुर्बान कर दूं तो क्या मेरे पिछले गुनाह माफ हो जाएगा? आपने फरमाया की हां, अगर तू अल्लाह की राह में लडे और दुश्मन के मुकाबले में जमा रहे भागे नहीं, और अल्लाह से सवाब पाने की नियत से लडे और तुझे कत्ल कर दिया जाए तो तेरे तमाम गुनाह माफ हो जाएगा.

थोडी देर के बाद आपﷺ ने फरमाया की अभी तुमने क्या सवाल पूछा था? उसने कहा मेने ये पूछा था की अगर अल्लाह की राह में लडते हुए कत्ल कर दिया जाउं तो क्या मेरे सब

गुनाह माफ हो जाएगा? आपﷺ ने फरमाया की हां, माफ हो जाएगा, जबकी तू दुश्मन के मुकाबले में जमे और अल्लाह से सवाब पाने की नियत से लडे, और जंग के मैदान से ना भागे तो तेरे सब गुनाह माफ हो जाएगा, लेकिन जो कर्ज़े तेरे जिम्मे किसी का है वो माफ ना होगा, मुझे हज़रत जिबरील (अलै) ने ये बात अभी बताई है. आखिरत का यकीन जब दिल में घर कर लेता है तो आदमी का यही हाल होता है की वो इस फिकर में रहता है की मेरे पिछले गुनाह कैसे माफ होंगे. इस हदीस से हुकूकुल इबाद की अहमियत भी वाज़ेह होती है अगर कोई शख्स किसी का कर्ज़ अदा कर सकता है लेकिन ना तो उसने अदा किया और ना माफ कराया तो चाहे वो अपनी जान अल्लाह को भेंट कर दे मगर कर्ज़ के हिसाब से नही बच सकता.